पुस्तक का नाम	रहने दो रिपोर्टर
प्रकाशक	मनसा पब्लिकेशन्स 2/256 विराम खण्ड गोमती नगर, लखनऊ–226010 फोन नं. 0522–4029598
संस्करण	प्रथम –2009
मूल्य	रुपये मात्र– 175/–
सर्वाधिकार सुरक्षित	मनसा पब्लिकेशन्स 2/256, विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226010
	ISBN- 978-81-907255-6-9

RAHANE DO REPORTER
By- Kusum Narayan 'Narayani'

मनसा पब्लिकेशन्स

2/256 विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-२२६०१०
फोन नं०- (0522) 4029598
ईमेल- manasapublications2007@rediffmail.com

अपनी बात

रहने दो रिपोर्टर! जैसे लगा कि खुद के लिये अपने अन्तः से एक स्वर उभरा! अब तक लगभग २०० कहानियाँ, कई उपन्यास लिखकर भी अपने आस-पास समाज में किसी संवेदना को जगह नहीं मिल रही।

मैं अपने आस-पास की मानवीय संवेदना को शब्द देकर उन्हें खुद पाठक के समक्ष रखती हूँ ताकि मुझ जैसे आम दर्द को जगह मिले, पर नहीं..... रोज ही रिश्तों की कड़ुवाहट, बड़े बुजुर्गों की उपेक्षा, जाति/धर्म की चौड़ी होती खाई, भ्रूण हत्या, बाल-मजदूरी जैसे अपराध बढ़ते जा रहे हैं। मीडिया की सक्रियता अवश्य बढ़ी है। खबरों में तार-तार साफ दिख रहे पर शायद व्यवसायिक मानसिकता उन्हें (T.R.P.) बढ़ाने में घटना को महिमा-मण्डित कर हमारी संवेदना की जगह घृणा, स्नेह की जगह ईर्ष्या पैदा कर रही है। बदलाव अवश्य हो रहा है पर सहजता/सहभागिता का अश्क धुंधला पड़ता जा रहा है। चमक-दमक की तीखी रोशनी में सब कुछ धूमिल होता जा रहा है। बस! रहने दो रिपोर्टर! पर मैं कलमकार हूँ मैं तो लिखूँगी। आप बदले न बदले..... पर लिखना मेरा जीवन है। आज नहीं तो कल..... कहीं कुछ भी बदला तो ।

अन्दर कुछ टूटता है कि क्या शब्द बेअसर हैं इनमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि.....। शब्द ब्रह्म है जो कभी मरता नहीं..... इसी विश्वास से कलम पकड़ पाती हूँ कि कभी तो यह जागृत होगा और शब्दों की सामर्थ्य नहीं समाज की इस कलुषता को दूर कर धवलता प्रदान करेगी।

कुसुम नारायण 'नारायणी'

अनुक्रम

१.	रहने दो रिपोर्टर	7–15
२.	कायापलट	16–23
३.	अपहरण	24–30
४.	फूल सदाबहार के	31–35
५.	अगरबत्ती	36–46
६.	केवट पुत्र	47–53
७.	गमक उठा पारिजात	54–59
८.	सूत्रधार	60–68
९.	अजनबी घर में	69–78
१०.	मोहभंग	79–88
११.	एक शब्द उधार का	89–98
१२.	कविता कमनीय	99–112
१३.	मन मृग बसी कस्तूरी गंध	113–136
१४.	यस सर	137–143

पूनम और आलोक के लिए

रहने दो रिपोर्टर

वह आज पूरी तरह छुट्टी मनाने के मूड में था। सवेरे सूरज चढ़ आने पर ही उठा था। फिर धीरे–धीरे चाय पीते हुए अखबार पढ़ता रहा था, अखबार भी आज उसने पूरा ही पढ़ा। समाचारों के बाद विज्ञापन भी सब पढ़े चाहे विवाह के हों, चाहे बनियान–मोजे के। पिक्चर और सांस्कृतिक समारोहों के लिये लिखा एक–एक शब्द घुटक लिया। एक नया–नया ब्यूटी पार्लर भी पास में खुला था उसकी भी जानकारी ले ली।

तभी उसका ध्यान घर में छाये सन्नाटे की ओर गया, न पानी गिरने की आवाज, न बर्तनों की खटर–पटर, न झाड़–पोंछ की फट–फट, घर में दो ही तो छोटे–छोटे कमरे हैं। आगे एक बालकनी बनी हुई है पीछे एक बरामदा है उसी के एक ओर रसोई है दूसरी ओर गुसलखाना। बरामदे में वॉशबेसिन लगा है।

वह एकाएक ही किसी आशंका से त्रस्त हो उठा। गंगा इतनी शांति से क्या कर रही है। वह उसे चौंकाने के विचार ही से नहीं उठा था।

बरामदे मे पैर रखते ही वह सहम सा गया। गंगा वॉशबेसिन के पास चुपचाप बैठी थी, सामने एक बोतल रखी थी, उसी को ध्यान से देख रही थी।

"गंगा वह एसिड की बोतल है" उसने आशंकित स्वर में कहा। "मैं नाली साफ करने के लिए लाया हूं, काई जमी हुई है न रोज तुम रगड़ती रहती हो, साफ नहीं होती। देखना जरा सा डालकर रगड़ने से एकदम झक साफ हो उठेगा...किंतु तुम नहीं छूना।"

'अच्छा' कहा, किन्तु अभी भी जैसे सोच में डूबी हुई थी।

'क्या सोच रही हो गंगा' उसने कन्धा पकड़कर झकझोर दिया।

"अं...कुछ नहीं।"

"नहीं सच बताओ...तुमने मुझसे कुछ न छुपाने की सौगंध ली है।"

"सच.. तो यह है कि सोच रही थी कि इसके लगाने से चेहरा बदल जायेगा तब कोई जल्दी पहचान नहीं पायेगा। पहचान भी ले तो किसी के मतलब की नहीं रहूंगी. ..लेकिन तुम्हारी भावनायें क्या होंगी... ।"

"मेरी भावनाओं का आदर करती हो तो अब से कभी यह विचार मन में न लाना।"

"पता नहीं क्यों... भय लगता है।"

उसे खींचता हुआ कमरे में लाया वह छोटी बच्ची की तरह सिमट रही थी।

"पता नहीं तुम भयभीत क्यों होती हो? मैंने सब जानबूझ कर ही तुमसे विवाह किया है...हमारा विवाह कानून सम्मत है– कोई हमें अलग नहीं कर सकता समझी? फिर तुम अपने शहर से इतनी दूर हो...यहां कौन तुम्हें पहचानने वाला है बेकार मन छोटा करती हो...चलो जल्दी तैयार हो जाओ आज खाना भी कहीं बाहर खायेंगे और खूब घूमेंगे।"

तभी द्वार पर आहट हुई। विमल ने द्वार खोला तो पड़ोसी जोशी जी की छोटी बेटी लतिका थी। बाहर से ही बोली– काकी, आज अपुन के घर हल्दी कुमकुम होगा आई तुमको बुलायाच दिन में दो बजे से पांच बजे तक जरूर आना अच्छा मैं जातीच. ..बहुत जागा में बोलने का है।"

गंगा ने प्रश्न भरी आंखों से पति की ओर देखा

"क्या है आज जोशी जी के घर?"

"सुहागिन महिलाओं को बुलाते हैं– टीका–वीका... नाश्ता पानी गाना–वाना यहीं सब होता है। प्रायः किसी–किसी के घर होता रहता है, मेरे पास तो आज ही बुलावा आया है, आता भी कैसे...सुहागिन तो अभी आई है.." उसने परिहास किया।

गंगा मुस्करायी पुनः गंभीर हो उठी, विमल ने बनावटी रोष दिखाते हुए कहा–

"सोचा था...दिन भर साथ–साथ घूमते रहेंगे– पिछले सभी रविवार या तो निमंत्रण में निकल गये या कोई आ ही गया जोशी काकी को भी आज का ही दिन मिला।"

"मैं अपनी हाजिरी लगाकर जल्दी से आ जाऊंगी, अच्छा... ।"

"नहीं–नहीं... जब सब उठें तभी तुम भी उठना, पहले पहल बुलाया है उन्होंने। मैं सोता रहूंगा, बोर थोड़े ही होऊंगा। अभी थोड़ी देर बाहर चले चलेंगे, मैं तो हंसी कर रहा था तुम सच मान गई, वहां सबसे मिलने का अवसर मिलेगा अच्छा ही है न।"

"कैसा रहा आज" गंगा के आने पर विमल ने पूछा

"बहुत अच्छा, बड़े अच्छे लोग हैं। हम तो कभी किसी से मिले ही नहीं थे... आसपास की सभी महिलायें थीं सबने मुझसे खूब प्यार से बातें कीं, सबकी शिकायत थी कि अड़ोस–पड़ोस से मिली ही नहीं।"

"तुमने कहा नहीं कि अभी तो हम एक दूसरे में ही खोये हुए हैं दूसरों से मिलने का समय कहां... ।"

"धत् कैसे कहती ऐसी बात!"

"अच्छा सबकी बोली समझ आई?"

"हांऽ थोड़ी बहुत तो आ ही जाती है वैसे मुझसे तो सब लोग हिन्दी में ही तो बोल रही थीं... ।"

"अभी तक तो तुम्हें किसी से मिलने में संकोच होता था अच्छा है, अब तुम्हारी झिझक हट जायेगी कभी–कभी किसी के घर हो आया करना...अकेली पड़ी रहती हो।"

मेल मुलाकात का सिलसिला चल निकला तो बढ़ता रहा। विमल प्रसन्न था कि गंगा का मन बहल गया है अब वह पहले जैसी सहमी–सहमी भयभीत सी नहीं रहती। अब वह पड़ोसिनों की बातें करती और अपनी नई–नई गृहस्थी के भविष्य की सुखद कल्पनाओं में खोई रहती।

मकर संक्रांति का त्योहार आया। ठंडाठार जाड़ा नहीं था गुलाबी सर्दी। बड़ा अच्छा मौसम, उस दिन अपने घर स्नान दान दक्षिणा होते देखी थी नया अनाज, खिचड़ी, तिल, गुड़, चिवड़ा लाई आदि आते देखा था, वह सब उसने भी मंगाया विधिवत सब पूजा आदि की। फिर पड़ोसियों के घर से हल्दी कुमकुम के निमंत्रण आने शुरू हुए। जोशी जी के घर से प्लास्टिक की टोकरी थी तो पाटिल ताई ने डब्बा दिया था देशपांडे के घर से बटुये थे तो कुलकर्णी ने स्टील की कटोरियां दी थी। अभी यह आयोजन कई दिन चलना था चार पांच घरों से बुलाया था कि गंगा ने मचल कर विमल से कहा–

"मैं भी सबको हल्दी कुमकुम का बुलावा दे रही हूं जोशी काकी ने कहा है कि वह सब तैयारी कर देंगी। मैंने सामान की लिस्ट बना ली है। आज ले आयेंगे।"

बाजार में जाते हुए विमल फूलों की वेणी वाले को देखकर रुक गया। गंगा वेणी लगाते सकुचाती थी, घर के बाहर तो कभी न लगाती। विमल ने हंसकर कहा "अब तुम अपनी सहेलियों की तरह वेणी लगाया करो, हल्दी कुमकुम करोगी, वेणी नहीं लगाओगी" तभी व्यवधान पड़ा।

"नमस्ते साहब...ऐसा लगता है आपको देखा है..." मुस्कराते हुए सामने खड़े व्यक्ति ने कहा।

"मुझे...जी...मैं पहचान नहीं पा रहा हूं।"

"लेकिन मैं पहचान गया हूं। आप वही हैं न 'विमल बाबू' अखबार में नाम देने से मना किया था जिसने।"

"जीऽ जी नहीं...मैं आपको नहीं पहचानता...मुझे क्षमा कीजिये" कहकर उसने शीघ्रता से कदम बढ़ाये वेणी भी नहीं ली।

"चलो गंगा" उसके मुख पर घबराहट के लक्षण देख गंगा विचलित हुई सामने से आता रिक्शा रोका बैठते हुए पति से कहा "घर चलते हैं।"

इतने में उस व्यक्ति की अपने साथी से बात हुई इसे तो मैं जानता हूं। मेरे घर के सामने वाली बिल्डिंग में है उसी के एक फ्लैट में रहता है। रोज बस स्टैंड पर दिखता है।

दूसरे दिन सुबह–सुबह विमल चाय का प्याला लिये अपनी बाल्कनी में बैठा धूप की गर्माहट महसूस कर ही रहा था कि द्वार पर दस्तक हुई।

"नमस्कार..मैं जयंत हूं... आप जो अखबार पढ़ रहे हैं न, मैं उसी का एक अदना सा रिपोर्टर हूं।"

विमल का चेहरा बुझ गया अनमने से स्वागत करने उसके लिए चाय मंगाई।

जयंत कहे जा रहा था "कहते हैं कि बड़े लोग नम्र होते हैं, आप तो साक्षात नम्रता के अवतार लगते हैं इतने उदार, समाज सुधारक, अभिमान नाम को नहीं।"

विमल ने प्रतिवाद किया।

"ऐसा लगता है आप लोग किसी भ्रम में हैं मुझे गलत समझ रहे हैं मैं वह नहीं हूं जो आप समझ रहे हैं।"

"तभी तो मैं कह रहा हूं आप जैसा महान व्यक्ति प्रचार से दूर रहना चाहता है पर आपने जो कुछ किया उसे सुनकर मुझे गर्व का अनुभव हुआ, आप मेरे घर के इतने पास रहते हैं अतः पड़ोसी ही हुए...पड़ोसी पर गर्व करना मैं जानता हूं।"

"मैंने क्या किया...मैं तो किसी प्रशंसा के योग्य नहीं भाई"

"आप संकोच न करें...गुप्ताजी ने मुझे सब बता दिया है। गुप्ता जी वही जो कल आपसे मिले थे आपने उन्हें नहीं पहचाना हो, संभव है, पर वह तो आपको पहचान गये आपकी पत्नी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले की हैं न..."

विमल नहीं न कर सका। गंगा पीछे खड़ी थी उसका चेहरा उतरा हुआ था।

"वह आपके विवाह में सम्मिलित हुए थे।"

"मैं ...उन्हें नहीं जानता" विमल ने हताश स्वर में कहा।

"आप न जानते होंगे.. आपकी पत्नी जानती हैं...जानती हैं न भाभी?"

'नहीं' पर इतने हल्के से कहा गया कि झूठ साफ पकड़ में आ रहा था।

"एक बार देखी सूरत वह नहीं भूलते, जिसे घंटों देखा हो उसे कैसे भूलेंगे। अभी तीन चार महीने पहले ही तो आपका विवाह हुआ है न...देखिये मेरा कोई स्वार्थ नहीं, कोई लांछन का उद्देश्य नहीं। आपकी इज्जत जितनी ड्यू है उतनी नहीं मिल रही है। मैं तो सिर्फ आपको इसलिए प्रकाश में लाना चाहता हूं कि लोगों को आपसे सबक मिले ऐसे समाज सुधारकों को छिपकर नहीं बैठना है। लोग जानेंगे कि पाप से घृणा करो पापी से नहीं। प्यार आदमी को बदल देता है। देवता पर पेशाब करने से देवता का कुछ नहीं बिगड़ता करने वाला ही नारकी होता है...

"...नारी निकेतन में भी कहां उनके शील की रक्षा हो पाती हैं उनको लेकर वार्डन पैसे बनाती हैं, अध्यक्ष अपनी भूख भी शांत करते हैं किराये पर भी देते हैं... आपके संग भी यही सब हुआ होगा, बराबर न...आपकी कहानी मार्मिक है, हृदयस्पर्शी है, बताइये भाभी...कैसे–कैसे गोरखपुर से उठा लिया...वहां से कहां...देवरिया हां मै। लिख लूं इन नामों से परिचित नहीं हूं न...फिर काशी में कितना दिन...महीना भर फिर आगरा भेजी जा रही थीं...किसी सज्जन ने रिपोर्ट किया पुलिस द्वारा बरामद करके एक नारी निकेतन में...वहां से भागीं तो रेल में आपसे मुलाकात लेकिन पुलिस द्वारा पकड़ी गईं फिर वहीं भेजी गईं...चच्च...फूल सी कोमल कुमारी कन्या थी कितना अत्याचार...।"

"वह फोटो ...विवाह के बाद का है...मैं अभी आपको दे जाऊंगा...यह सिगरेट लीजिये न...विदेशी है...मेरा पेशा ही ऐसा है भाई, लोग बहुत आवभगत करते हैं अखबार में छपने के लिए...मेरा रुतबा ही इतना है...भाभी आपका एक चित्र लेना है।"

"रसोई में काम करते हुए– लोग देखेंगे अहा कैसी सुघर गृहिणी है कैसी सुंदर गृहस्थी है...हां तो आपने जानकी को गंगा नाम दिया। बहुत ठीक गंगा तो पवित्र है गंगा मैली थोड़ी होती...आप...स्तुत्य हैं...पूजा के योग्य हैं लोग आपके आगे सिर झुकायेंगे...।"

"अच्छा धन्यवाद...मैं चलता हूं।" वह अपना कागज समेट कर उठ गया। विमल नीचे तक पहुंचाकर आया तो गंगा वैसे ही दीवार से सटी खड़ी थी। मौन, चिंतित, भयाक्रांत, प्रशंसा के मद से मस्त विमल को देर हो रही थी। ध्यान नहीं दिया। शाम

उसने हल्दी कुमकुम के लिए सामान लाने को कहा तो गंगा ने मना कर दिया, अभी ठहर कर लाऊंगी।

तीसरे दिन अखबार के तीसरे पृष्ठ पर वही चित्र था जो उनके घर अल्मारी पर रखा सबने देखा था। दूसरा चित्र गंगा का चौके में काम करते हुए, साथ में संक्षेप में उसकी यातना की कहानी एवं विमल की महानता की।

विमल को उठने में देर हो गई थी। अखबार ऊपर–ऊपर से देखकर काम पर जाने के लिए तैयार होने लगा कि उसे मिलने वाले एक–एक कर आने लगे। फ्लैट के सभी लोग आये उसके उदार दृष्टिकोण पर बधाई दी– "हम नहीं जानते थे कि हमारे पड़ोस में आप जैसे महान व्यक्ति रहते हैं आपने वस्तुतः लोगों का मार्गदर्शन किया है... ।"

"...प्रचार प्रसार से इतने दूर कि आज का अखबार तक नहीं देखा जबकि अपने विषय में छपने की आशा थी!"

"वाह आप धन्य हैं... अब आप दोनों सुखी रहें, हमारी कामना है।"

गंगा न भोजन ही तैयार कर सकी न नाश्ते का डब्बा ही। अपने अंदर कंपन महसूस कर रही थी अज्ञात भय का, विमल तैयार होकर आया तो कहा–

"मैं वहीं कुछ खा लूंगा, तबियत अच्छी नहीं तो चिन्ता न करो अपना ध्यान रखना।"

पुरुषों के जाने के बाद ओने–कोने से झांकती महिलाओं की बारी आई। किसी ने कड़ाही में सब्जी छोड़ी, किसी ने तवे पर रोटी, किसी ने रोता हुआ बच्चा छोड़ा किसी ने अन्य आवश्यक कामों से मुख मोड़ा। एक–एक कर सब गंगा का हाल पूछती पहुंच गईं। सबमें यह बताने की होड़ लगी थी कि सबसे पहले किसने अखबार देखा और कैसे एक दूसरे को जानकारी दी। काम की बेला न होती तो कब से वह गंगा के पास पहुंच गई होतीं। फिर जब निर्णय नहीं हो पाया कि किसने सबसे पहले अखबार देखा तब दूसरी बात उठी। सभी ने एक स्वर से कहा कि हमें नहीं पता था कि आपका नाम जानकी है फिर कोई कहती 'नाम तो हम लोग भी पति गृह का दूसरा रखते हैं आपके गांव में ऐसा नहीं होता क्या...?"

"अच्छा तो जानकी तो पतिव्रता देवी का नाम था आपको तो साक्षात भगवान मिल गया पति रूप में।"

"बेचारी..औरत का क्या दोष।"

"बच्ची रही होगी..वह लोग भगा लाया होगा...कैसे"

'मीठा मीठा बात किया होगा...फुसला लिया होगा"

"न न तुम ठीक से नहीं पढ़ा ..हम तो चार पांच बार पढ़ के देखा, झूठ बोलकर लाया कि इसकी मां बुलाया है" कितने सुने हुए किस्से बयान किये गये सबने गंगा से सहानुभूति दिखाई। खाली चौका देख कई घरों से खाना आ गया। जबरदस्ती कौर–कौर खिलाया...आंसू पोछे संवेदना की लहर सी चली थी। सभी को बहा ले चली थी। गंगा को भी सबकी अपने प्रति कोमल भावनायें देखकर लगा कि उसकी आशंका निर्मूल थी वह बेकार इतनी भयभीत हो रही थी कि उसका अतीत जानकर कहीं लोग उससे घृणा न करने लगें फिर भी वह आश्वस्त न हो पाई।

विमल ने सवेरे कहा था "शाम को तैयार रहना डाक्टर को भी दिखाना है और बाजार भी जाना है।"

किन्तु शाम को वह कहीं नहीं गई दो तीन दिन बीत गये घर से निकली ही नहीं।

काशीबाई दो दिन से नहीं आई थी तीसरे दिन उसको आया जान द्वार खोलकर प्रतीक्षा करने लगी। उसने बाहर से ही कहा– बाई, मेरी पगार दे दो जितना बनता है, काम का टेम नहीं है। गंगा चकित हो उससे कुछ पूछने वाली थी तभी सुना– "जूठा काम करते हैं तो क्या हमारा धरम इमान तो बना है..छिः ऐसी बाई के घर कौन काम करेगा... ।"

उसी को सुनाकर कहा जा रहा था।

कूड़ा फेंकने वाली जमादारनी ने भी हां में हां मिलाई–

"राम बोलो जी...गंदा काम करते तो क्या हमारा धरम है– आदमी के लिये तो सुच्चे हैं...अजी कसम खाकर कह दे कोई..आज तक किसी ने बांह भी पकड़ी हो... कोई बोल कर देखे झाड़ू न लगाऊं तो कहना" सतना से आयी जमादारनी से उसकी यों तो खूब बातें हुआ करती थीं। भाजी वाला आया था दो दिन से लिया नहीं था। आज साहस करे उतरी। गोभी, मटर का भाव पूछते ही वह मुस्कराया 'अजी आप मुफ्त में ले लो।'

जोशी काकी ने महरी से कहला दिया उनके पास समय नहीं है हल्दी कुमकुम में आने के लिए।

लतिका स्वेटर की बुनाई पूछने आ रही थी कि मां ने जोर से ही कहा था– "गंगा बाई कि वेश्याबाई...तुमचा काज नहीं बाबा ना सांगतील?"

गंगा ने यथार्थ समझ लिया था अंदर ही अंदर घुलती रही। एक घर से विवाह के गीतों के लिए बुलावा आया हुआ था विमल उससे कह रहा था "दिन मे थोड़ी

देर को चली जाना नैवेद्य दे देना, गंगा कहीं जाने को तैयार नहीं थी।

विमल समझाता रहा– "देखो, हमें कमजोर नहीं पड़ना है...हमने कोई बुरा काम तो नहीं किया है...विवशता ने जो करा दिया उसके लिए लज्जित क्यों हो? तुम जरूर वहां जाओ सबसे मिलो–जुलो नहीं लोग गलत समझेंगे हमें दोषी समझेंगे...उनके यहां लडकी का विवाह है तुमको बुलाया है, नहीं जाओगी तो कहीं बुरा मान जायें कि पास में रहकर आई भी नहीं...।"

गंगा ने उसके सामने तो "ठीक है, मैं चली जाऊंगी" कहा किन्तु दुविधा में थी। जोशी काकी के मुख से सुन ही लिया था और लोग भी ऐसा ही कहें तब...उधर विमल का कहा भी मन में गूंजता रहा "हमें कमजोर नहीं पड़ना है..." वह बड़ा साहस जुटा कर ही वहां गई थी।

वहां पहुंची तो कुछ महिलायें नृत्य कर रही थीं गाना हो रहा था, हंसी खुशी का माहौल था, उसे देखते ही नृत्य थम गया, गाना बंद हो गया। सबकी दृष्टि उसकी ओर उठी, उसे याद आया कि जब वह पहले पहल जोशी काकी के घर गई थी उस दिन भी वहां गाना हो रहा था, किन्तु उसके जाते सबने मुस्कराकर उसका स्वागत किया था। उन दृष्टियों में कौतूहल था पहचान का, परिचय का किन्तु स्नेह का भाव भी था।

आज पहले तो वहां उपस्थित महिलायें एक दूसरे की ओर देखकर मुस्करायीं। घर की मालकिन ने पहले गहरे से उसे देखा फिर बैठने का संकेत किया। उसके पास की महिलायें थोड़ा सरकीं जैसे उसका स्पर्श बचा रही हों।

परस्पर फुसफुसाहट हुई, अपनी भाषा में, आज उससे कोई हिन्दी में नहीं बोली किन्तु उससे न बोलने की चुप्पी इतनी मुखर थी, इतना प्रखर था उसका प्रहार कि गंगा अधिक देर न बैठ सकी।

नैवेद्य का लिफाफा हाथ में ही रह गया। वह उठी तब भी उससे किसी ने बैठने को न कहा, न जल्दी जाने का कारण पूछा, फिर वहीं उनकी बींधती सी दृष्टियां बाहर आते ही सुना "पतिव्रता सुआसिनी आहे हलदी कुमकुम योचा ढोंग। जानकीच्या अगिनपरीक्षा...कलियुग आहे त्रेता नहीं...निर्लज्ज...कलंकिनी" आदि शब्द उसका पीछा करते रहे।

कुहराम मचा हुआ था। गंगा ने गुसलखाने में मिट्टी का तेल छिड़ककर अपने को जला लिया था। विमल के नाम एक पत्र रखा था,

"औरत पर कलंक लग जाये तो उसे कलंक के साथ ही जीना होता है। आप

पुरुष हैं दूसरा विवाह करेंगे किन्तु मेरे साथ रहकर आप भी कलंकित ही रहेंगे। हम इस लांछन को सह भी लेते पर मैं, मां बनने वाली हूं, बेटा होता तो वह भी कलंक का टीका लेकर आता, मेरी बेटी होती तो और भी विडम्बना होती।"

आत्महत्या करके मैं पाप कर रही हूं पर आप को इन सबसे मुक्ति दे रही हूं मुझे क्षमा करना... अखबार वाले फिर पूछने आयेंगे उन्हें यह पत्र दे देना, शायद मेरी तस्वीर भी लेना चाहें ले लेंगे।

विमल से पढ़ा नहीं जा रहा था पत्र हाथ से छूट गया।

"क्या लिखा है क्या कारण है लाइये हम पढ़ सकते हैं..." भीड़ जमा थी पत्र कई लोग पढ़ चुके थे, पत्र पकड़ते हुए जिसे देखा विमल आक्रोश से फट पड़ा–

"तस्वीर भी ले लो" रिपोर्टर ने सहमकर उसे देखा और पत्र पढ़ने में लग गया।

•••